डा. राजीव कुमार,
इतिहास विभाग,
एच. डी. जैन कॉलेज, आरा

Topic - अफ़ग़ान शासन के अंतर्गत बिहार में स्थापत्य एवं सांस्कृतिक विकास।
The architectural and cultural development in Bihar under Afghan rule.

प्रस्तावना :

16वीं शताब्दी, जो विशेष रुप से Sher Shah Suri और उसके उत्तराधिकारियों के काल से जुड़ा हुआ है। यह काल राजनीतिक अस्थिरता के बीच प्रशासनिक सुदृढ़ीकरण, नगरीय विकास और विशिष्ट स्थापत्य शैली के उद्भव का काल था। विशेषतः Sasaram में निर्मित मकबरे इस युग की स्थापत्य दृष्टि, सांस्कृतिक समन्वय और शिल्प-नवाचार के सर्वोच्च उदाहरण हैं।

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

15वीं–16वीं शताब्दी में बिहार राजनीतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र था। लोदी वंश के पतन के बाद अफ़ग़ान सरदारों ने यहाँ अपनी शक्ति का पुनर्गठन किया। Sher Shah Suri ने बिहार को अपनी शक्ति का आधार बनाया और यहीं से मुग़लों को परास्त कर उत्तर भारत में अपना साम्राज्य स्थापित किया। बिहार इस प्रकार अफ़ग़ान सत्ता का राजनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र बन गया।

2. अफ़ग़ान स्थापत्य की विशेषताएं :

अफ़ग़ान स्थापत्य में निम्न प्रमुख विशेषताएँ मिलती हैं—
मजबूत और सुदृढ़ संरचना – भवनों में मोटी दीवारें और ठोस निर्माण।
सादगी और गरिमा – अत्यधिक अलंकरण की अपेक्षा संतुलित सजावट।
स्थानीय शिल्प का समावेश – हिंदू स्थापत्य तत्वों जैसे छतरियाँ, झरोखे, कमलाकार अलंकरण।
जल-संरचनाओं का उपयोग – तालाबों और कृत्रिम जलाशयों के मध्य निर्माण।
ऊँचे चबूतरे और अष्टकोणीय योजना – मकबरों में विशेष रूप से।
इन विशेषताओं का उत्कृष्ट उदाहरण सासाराम के मकबरों में देखने को मिलता है।

3. सासाराम के मकबरे : स्थापत्य की पराकाष्ठा :

(क) Sher Shah Suri Tomb :

यह मकबरा भारतीय इस्लामी स्थापत्य का अद्वितीय नमूना है। इसका निर्माण 1540–1545 ई. के बीच हुआ। इसकी प्रमुख विशेषताएँ—
यह एक विशाल कृत्रिम झील के मध्य ऊँचे चबूतरे पर निर्मित है।
अष्टकोणीय योजना पर आधारित।
लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग।
विशाल केंद्रीय गुंबद।
चारों ओर खुली छतरियाँ और मेहराबदार द्वार।
यह मकबरा अपनी भव्यता और संतुलन के कारण कभी-कभी “पूर्व का ताज” भी कहा जाता है, यद्यपि यह मुगल काल से पूर्व निर्मित है। इसमें हिंदू और इस्लामी स्थापत्य का समन्वय स्पष्ट दिखाई देता है।

(ख) Hasan Khan Sur Tomb :

यह मकबरा शेरशाह के पिता हसन खाँ सूरी का है। यह अपेक्षाकृत सरल है, परंतु इसमें भी अष्टकोणीय योजना और सजावटी मेहराबों का प्रयोग मिलता है। यह शेरशाह के मकबरे की स्थापत्य-परंपरा की पूर्वपीठिका के रूप में देखा जा सकता है।

(ग) Islam Shah Suri Tomb :

इस्लाम शाह का मकबरा अधूरा है, किंतु उसकी योजना से स्पष्ट है कि अफ़ग़ान स्थापत्य निरंतर विकासशील था। इसमें भी विशालता और संतुलन का प्रयास दिखाई देता है।

4. स्थापत्य का सांस्कृतिक अर्थ :

सासाराम के मकबरों का महत्व केवल स्थापत्य तक सीमित नहीं है, बल्कि वे सांस्कृतिक समन्वय के प्रतीक हैं—
हिंदू-मुस्लिम समन्वय – छतरियाँ, ब्रैकेट, कमल अलंकरण भारतीय परंपरा से; गुंबद और मेहराब इस्लामी परंपरा से।
राजकीय वैधता का प्रतीक – शेरशाह ने मकबरे के माध्यम से अपनी शक्ति और वैधता को स्थायी रूप दिया।
स्थानीय कारीगरों की भागीदारी – निर्माण में स्थानीय शिल्पकारों की सक्रिय भूमिका।

5. अन्य स्थापत्य विकास :

अफ़ग़ान शासन में केवल मकबरे ही नहीं, बल्कि किलों और सड़कों का भी विकास हुआ—
Rohtasgarh Fort का सुदृढ़ीकरण।
सरायों और सड़कों का निर्माण (विशेषतः ग्रैंड ट्रंक रोड)।
मस्जिदों और सार्वजनिक भवनों का निर्माण।
ये सभी संरचनाएँ प्रशासनिक दक्षता और सांस्कृतिक संरक्षण की ओर संकेत करती हैं।

6. सांस्कृतिक विकास :

(क) प्रशासनिक और सामाजिक प्रभाव :

शेरशाह की भूमि-राजस्व प्रणाली ने आर्थिक स्थिरता प्रदान की। इससे शिल्प और व्यापार को प्रोत्साहन मिला।

(ख) भाषाई विकास :

फ़ारसी प्रशासनिक भाषा थी, परंतु स्थानीय भाषाओं का भी विकास हुआ। सांस्कृतिक समन्वय की प्रक्रिया ने हिंदी-उर्दू के विकास की पृष्ठभूमि तैयार की।

(ग) धार्मिक सहिष्णुता:

यद्यपि शासन इस्लामी था, किंतु धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई गई, जिससे सामाजिक समरसता बनी रही।

7. मुग़ल स्थापत्य पर प्रभाव :

अफ़ग़ान स्थापत्य ने बाद के मुग़ल स्थापत्य को प्रभावित किया। सासाराम का मकबरा गुंबद, ऊँचा चबूतरा और उद्यान योजना की दृष्टि से बाद के मुग़ल मकबरों की पूर्वपीठिका माना जाता है। इस प्रकार अफ़ग़ान स्थापत्य को मुग़ल स्थापत्य की आधारशिला भी कहा जा सकता है।

8. समालोचनात्मक मूल्यांकन :

सकारात्मक पक्ष
स्थापत्य में मौलिकता और संतुलन।
स्थानीय और इस्लामी तत्वों का समन्वय।
राजनीतिक स्थिरता के माध्यम से सांस्कृतिक विकास।
सीमाएँ
शासन की अल्पावधि (1540–1555 ई.)।
स्थापत्य विकास मुख्यतः राजकीय परियोजनाओं तक सीमित।
व्यापक सांस्कृतिक आंदोलन का अभाव।

फिर भी, उपलब्ध समय और संसाधनों की तुलना में अफ़ग़ान शासन का स्थापत्य योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष :

अफ़ग़ान शासन के अंतर्गत बिहार में स्थापत्य और सांस्कृतिक विकास एक संक्रमणकालीन परंतु अत्यंत रचनात्मक चरण था। Sasaram के मकबरे विशेषतः Sher Shah Suri Tomb भारतीय स्थापत्य इतिहास में मील का पत्थर हैं। इनमें न केवल स्थापत्य कौशल की पराकाष्ठा दिखाई देती है, बल्कि सांस्कृतिक समन्वय और राजनीतिक वैधता का भी सशक्त संदेश निहित है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि अफ़ग़ान शासन के अधीन बिहार का स्थापत्य विकास अल्पकालिक होते हुए भी गहन प्रभावशाली था। सासाराम के मकबरे इस युग की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और कलात्मक चेतना के जीवंत प्रतीक हैं और भारतीय स्थापत्य परंपरा में उनका स्थान अत्यंत विशिष्ट है।